Title: Need to construct a helipad and an air strip at Chuddhar in Himachal Pradesh - Laid.

डॉ. कर्नल (से्वानि्वृत्त) धनीराम ्शांडिल्य (शिमला) : अध्यक्ष महोद्य, आपके माध्यम ्से मैं केन्द्रीय ्सरकार का ध्यान हिमाचल प्रदे्श में ्सिरमौर क्षेत्र के उ्स ्स्थान की ओर आकृ्ट करना चाहूंगा जो एक प्राचीन धार्मिक ्व ऐतिहा्सिक ्स्थल है। ्यह ्भव्य ्व आर्क्ाक ्स्थान हिमाचल ्व उत्तरांचल के ्बीच की ऊंची प्र्वत मालाओं में है। इ्स मनोरम ्स्थल को "चू्ड़धार" के नाम ्से जाना जाता है। ्यह ्स्थान ्वन-सम्पदा ्से ्भरा प्ड़ा है। ्यहां के घने जंगल में नाना प्रकार के प्शु-पक्षी प्राकृतिक ्सौंद्र्य में ्स्वच्छंद ्रूप ्से ्विचरण करते हैं, जिनमें चीता, ्बाघ, रीछ, हिरण ्व मोनाल प्रमुख ्रूप ्से पाए जाते हैं। इ्स ्स्थल पर ्शिरगुल महाराज के नाम पर हर ्व्ा मेले का आ्योजन होता है।

महोद्य, प्र्यटन को ्विक्सित करने की दृ्टि ्से इस रमणीक ्स्थल में अपार ्सं्भा्वनाएं हैं। इ्स ्स्थल पर प्र्यटकों की ्सुविधाओं में ्सुधार लाने हेतु रज्जु मार्ग का निर्माण करने ्से प्शु-पक्षि्यों को प्राकृतिक ्वाता्वरण में देखने का ्भी प्रा्वधान कि्या जा ्सकता है।

मेरा केन्द्रीय ्सरकार ्से अनुरोध रहेगा कि इ्स क्षेत्र में प्र्यटन को ्विक्सित करने के उद्दे्श्य ्से एक हेली-पैड ्व छोटी ्विमान पट्टी का निर्माण प्राथमिकता के आधार पर कि्या जा्ये। मैं प्र्यटन मंत्री जी ्से अनुरोध क्रूंगा कि इ्स का्र्य को पूरा करने हेतु एक केन्द्रीय ्स्र्वेक्षण दल ्भेजने की कृपा करें।